

1855 का संथाल हुल

प्रलिस के लयः

1855 का संथाल हुल, संथाल परगना काश्तकारी अधनियम, 1876, दकू, आदवासी वदरोह, मुंडा वदरोह

मेन्स के लयः

औपनवशकऱ भारत में जनजातीय वदरोह, जनजातीय भूमऱ अधिकार और औपनवशकऱ नीतयऱँ, आधुनकऱ भारतीय इतऱहऱस

[सरोतः इंडयऱन ँकसपरेस](#)

चरुा में कयऱँ?

हऱल ही में 30 जून 2024 को 1855 के संथाल हुल की 169वीं वरुषगऱँठ मनऱई गई, जो बरुतऱशऱ औपनवशकऱ उत्पीडन के खलऱफ ँक महत्तवपूरण कसऱन वदरोह का प्रतीक है ।

- इस वदरोह के परणऱमस्वरूप संथाल परगना काश्तकारी अधनियम, 1876 और ँटऱनऱगपुर काश्तकारी अधनियम, 1908 पऱरतऱ हुऱ, जो भारत में जनजातीय भूमऱ अधिकऱरऱँ तथऱ सऱंस्कृतकऱ स्वऱयत्ततऱ के संरकषण के लयऱ अत्यंत महत्तवपूरण थऱ ।

1855 का संथाल हुल कयऱ है?

- ऐतऱहऱसकऱ पृष्ठभूमऱ:** 1855 का संथाल हुल भारत में बरुतऱशऱ औपनवशकऱ शऱसन के खलऱफ सबसे शुरुऱती कसऱन वदरोहऱँ में से ँक थऱ । चऱर भऱइयऱँ - सदऱधऱ, कऱनहऱ, चऱँद और भैरव मुरुू के सऱथ-सऱथ बहनऱँ फूलऱ और झऱनऱ के नेतृत्व में, वदरोह 30 जून 1855 को शुरु हुऱ।
 - वदरोह का लकष्य न केवल अंगरेज थे, बल्कऱ उच्च जऱतयऱँ, ज़मींदऱर, दरऱगऱ और सऱहूकर भी थे, जऱनऱहँ सऱमूहकऱ रूप से 'दकू' कऱहऱ जऱतऱ थऱ ।
 - इसकऱ उददेश्य संथऱल समुदऱय के आरुथकऱ, सऱंस्कृतकऱ और धऱरुमकऱ अधिकऱरऱँ की रकषऱ करनऱ थऱ ।
- वदरोह की उत्पत्तऱ:**
 - वरुष 1832 में कूछ कषेतरऱँ को 'संथऱल परगनऱ' यऱ 'दऱमनऱ-ँ-कऱह' नऱम दयऱ गयऱ, जऱसऱमें वरुतमऱन झऱरखंड में सऱहबऱंगज, गऱड्डऱ, दुमकऱ, देवघर, पऱकूड और जऱमतऱड्डऱ के कूछ हऱसऱसे शऱमलऱ हैं ।
 - यह कषेतर संथऱलऱँ को दयऱ गयऱ थऱ जो बंगऱल प्रेसीडँसी के अंतरगत वऱभऱनऱन कषेतरऱँ से वसऱथऱपतऱ हुऱ थऱ ।
 - संथऱलऱँ को दऱमनऱ-ँ-कऱह में बसने और कृषऱ करने का वऱदऱ कयऱ गयऱ थऱ, लेकनऱ इसके बदले उनहँ दमनकऱरी भूमऱ हऱडपने तथऱ बेगऱरी (बँधुऱऱ मज़दूरी) का सऱमनऱ करनऱ पड्डऱ ।
 - संथऱल कषेतर में बँधुऱऱ मज़दूरी की दऱ प्रणऱलऱयऱँ उभरी, जऱनऱहँ कऱमयऱती और हरवऱही के नऱम से जऱनऱ जऱतऱ है ।
 - कऱमयऱती के तहत, ःण चुकऱँ जऱने तक ःणदऱतऱ के लयऱ कऱम करनऱ पड्डऱ थऱ, जबकऱ हरवऱही के तहत, ःणदऱतऱ को वयकृतगऱत सेवऱँ प्रदऱन करनी पड्डऱती थी और ऱवशयकतऱनुसऱर ःणदऱतऱ के खेत की जुतऱई करनी पड्डऱती थी । बऱँड की शरुतँ इतनी सखुत थी कऱ संथऱल के लयऱ ँपने जऱवनकऱल में ःण चुकऱनऱ लऱगभऱग असंभव थऱ ।
- गुरलऱलऱ युद्ध ँवं दमनः**
 - मुरुू बँधुऱँ ने ईस्ट इंडयऱ कंपनी के खलऱफ गुरलऱलऱ युद्ध में लऱगभऱग 60,000 संथऱलऱँ का नेतृत्व कयऱ । ँह महीने तक चले भयंकऱर प्रतऱरऱशऱ के बऱवजूद, जनवरी 1856 में भऱरी जनहऱनऱ और तबऱही के सऱथ वदरोह का दमन दयऱ गयऱ ।
 - 15,000 से जूयऱदऱ संथऱलऱँ ने ँपनी जऱन गँवऱई और 10,000 से जूयऱदऱ गऱँव नषुट हो गऱ ।
 - हुल ने बरुतऱशऱ औपनवशकऱ शऱसन के खलऱफ शुरुऱती प्रतऱरऱशऱ को उजऱगर कयऱ और यह आदवऱसी लऱचीलेपन का प्रतीक बनऱ हुऱ है ।
- प्रभऱवः** इस वदरोह के परणऱमस्वरूप ही संथऱल परगनऱ काश्तकारी (Santhal Pargana Tenancy- SPT) अधनियम, 1876 पऱरतऱ कयऱ गयऱ जो आदवऱसी भूमऱ को गैर-आदवऱसऱयऱँ को हऱसुतऱंतरतऱ करने को प्रतऱबऱधतऱ करतऱ है, केवल समुदऱय के भीतर ही भूमऱ उत्तरऱधकऱरऱ की स्वीकृतऱ देतऱ है तथऱ संथऱलऱँ को ँपनी भूमऱ पर स्वयं शऱसन करने का अधिकऱरऱ सुरकषतऱ रऱखतऱ है ।

संथाल जनजाति

- गोंड और भील के बाद यह भारत में तीसरी सबसे बड़ी अनुसूचित जनजाति है, जो अपने शांतपूरण स्वभाव के लिये जानी जाती है। वे मूल रूप से खानाबदोश थे और बिहार तथा ओडिशा के संथाल परगना में बसने से पहले छोटा नागपुर पठार में नविस करते थे।
 - ये झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में नविस करते हैं तथा कृषि, औद्योगिकी श्रम, खनन एवं उत्खनन जैसे कार्यों में शामिल हैं।
- वे एक स्वायत्त आदिवासी धर्म में आस्था रखते हैं और पवित्र उपवनों के रूप में प्रकृति की उपासना करते हैं। उनकी भाषा को [?] कहा जाता है जिसकी अपनी लिपि है जिसे 'OL [?]' कहा जाता है जो आठवीं अनुसूची में अनुसूचित भाषाओं की सूची में शामिल है।
- उनके कलारूप, जैसे- फूटा कच्चा पैटर्न की साड़ी और पोशाक आदि लोकप्रिय हैं। वे कृषि और उपासना से संबंधित विभिन्न त्योहारों तथा अनुष्ठानों को मनाते हैं। संथाल घर, जिन्हें 'Olah' के नाम से जाना जाता है, बाहरी दीवारों पर बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित अपने बड़े आकार, सफाई और आकर्षक रूप के कारण आसानी से पहचाने जा सकते हैं।

छोटा नागपुर क्षेत्र में हुए अन्य जनजातीय विद्रोह कौन-से हैं?

- मुंडा विद्रोह: मुंडा उलगुलान (विद्रोह) भारतीय स्वतंत्रता के दौरान एक महत्वपूर्ण जनजातीय विद्रोह था, जिसने जनजातीय लोगों द्वारा शोषण का विरोध करने उनकी क्षमता को उजागर किया।
 - यह अधिनियम आदिवासी और दलित समुदाय की भूमि की बिक्री को भी प्रतिबंधित करता है कति समान पुलिस के क्षेत्र में किसी अन्य आदिवासी व्यक्ति तथा एक ही ज़िले के दलित व्यक्ति के बीच भूमि हस्तांतरण की अनुमति देता है।
 - झारखंड के छोटा नागपुर में मुंडा जनजाति को, जो मुख्य रूप से कृषि करती थी, ब्रिटिश उपनिवेशवादियों, जमींदारों और मशीनरियों के उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। उनकी भूमि ज़ब्त कर ली गई और मजदूरों के रूप में काम करने के लिये विवश किया गया।
 - बरिसा मुंडा ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया और जनजाति की छिनी गई भूमि तथा उनके अधिकारों को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया।
 - बरिसा आंदोलन के परिणामस्वरूप वर्ष 1908 में अंगरेजों द्वारा अधिनियमि किये गए छोटा नागपुर काश्तकारी अधिनियम (CNT अधिनियम), ज़िला कलेक्टर की स्वीकृति से एक ही जाति और कुछ भौगोलिक क्षेत्रों के भीतर ही भूमि के हस्तांतरण की अनुमति देता है।
- ताना भगत आंदोलन: यह आंदोलन अप्रैल 1914 में जतरा भगत के नेतृत्व में शुरू हुआ, जिसका उद्देश्य छोटा नागपुर के उराँव समुदाय में कुप्रथाओं को रोकना और ज़मींदारों द्वारा किये जा रहे शोषण का विरोध करना था।
 - इस आंदोलन ने महात्मा गांधी से प्रभावित होकर अहसा को बढ़ावा दिया। आंदोलन के परिणामस्वरूप, पशु बलि बंद कर दी गई और शराब का सेवन प्रतिबंधित कर दिया गया।
- चुआर विद्रोह: चुआर विद्रोह छोटा नागपुर और बंगाल के मैदानों के मध्य क्षेत्र में शुरू हुआ जो वर्ष 1767 से 1802 तक जारी रहा। इसका नेतृत्व दुरजन सहि ने किया। अंगरेजों द्वारा उनकी भूमि अधिग्रहण का जनजातियों ने विद्रोह किया और गुरलिला युद्धनीतिका इस्तेमाल किया।
- तमाड़ विद्रोह: यह वर्ष 1789 और 1832 के बीच छोटा नागपुर क्षेत्र में तमाड़ के उराँव जनजातियों द्वारा किया गया विद्रोह था, जिसका नेतृत्व भोला नाथ सहाय ने किया था।
 - जनजातियों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू की गई दोषपूर्ण संरक्षण प्रणाली के खिलाफ विद्रोह किया, जो कि काश्तकारों के भूमि अधिकारों को सुरक्षित करने में विफल रही थी, जिसके कारण वर्ष 1789 में तामार जनजातियों में अशांति फैल गई।

औपनिवेशिक भारत में जनजातीय विद्रोह

- औपनिवेशिक भारत में जनजातीय विद्रोह विविध और बहुआयामी थे, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों तथा जनजातीय समुदायों पर उनके प्रभाव के विरुद्ध गहरी शकियतों को दर्शाते थे।
- मुख्य भूमि और सीमांत जनजातीय विद्रोहों में वर्गीकृत ये आंदोलन 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर भारतीय स्वतंत्रता की पूर्व संध्या तक फैले रहे, जिन्होंने क्षेत्रीय गतिशीलता को प्रभावित किया तथा ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी।

| स्थिति | मुख्यभूमि जनजातीय विद्रोह | सीमांत जनजातीय विद्रोह |
|---------------------|--|--|
| भौगोलिक फोकस | मध्य एवं पश्चिम-मध्य भारत। | भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र |
| विषयताएँ | कृषि एवं वन आधारित; भूमि एवं वन नीतियों पर केंद्रित। | राजनीतिक स्वायत्तता और सांस्कृतिक संरक्षण; भूमि निपटान नीतियों से कम प्रभावित। |
| कारण | भू-राजस्व बंदोबस्त, वन नीतियाँ, बाहरी लोगों का आगमन और ईसाई मशीनरियाँ | राजनीतिक स्वायत्तता, भूमि और जंगलों पर नियंत्रण तथा गैर-संस्कृतिकरण आंदोलन |
| लक्ष्य | स्थानीय स्वायत्तता, सांस्कृतिक संरक्षण | राजनीतिक स्वायत्तता, स्वतंत्रता |
| सांस्कृतिक प्रतिरोध | जनजातीय पहचान और रीति-रिवाजों को संरक्षित करने का लक्ष्य | सांस्कृतिक प्रभावों का विरोध किया, विशेषकर संस्कृतीकरण का |
| प्रभाव | क्षेत्रीय पहचान और स्वायत्तता आंदोलनों में योगदान दिया | स्वदेशी प्रथाओं और राजनीतिक स्वायत्तता के संरक्षण पर ध्यान केंद्रित |
| आंदोलनों के उदाहरण | पहाड़िया विद्रोह (1778, राजमहल हलिस), चुआर विद्रोह (1776, मदिनापुर और बांकुरा), खोंड विद्रोह (1837-56 और 1914), कोया विद्रोह (1879-80, आंध्र प्रदेश का पूर्वी गोदावरी) | अहोम विद्रोह (1828, असम), सगिफोस विद्रोह (1830 के प्रारंभ में, असम), कुकी विद्रोह (1817-19, मणिपुर), नागा आंदोलन (1905-31; मणिपुर) और जेलियांगसोंग आंदोलन (1920 का |

भारत में प्रमुख जनजातीय विद्रोह (MAJOR TRIBAL REVOLTS IN INDIA)

| जनजाति (विद्रोह) | क्षेत्र | वर्ष | प्रमुख नेता |
|-------------------------------------|--|-------------------------------|---|
| पहाड़िया | राजमहल पहाड़ियाँ | 1778 | राजा जगनाथ |
| चुआर (जंगल महल विद्रोह) | जंगल महल (छोटा नागपुर और बंगाल के मैदान के बीच) | 1798 | दुर्जन/दुरजोल सिंह, माधब सिंह, राजा मोहन सिंह, लछमन सिंह |
| उरांव और मुंडा (तमाड़ विद्रोह) | तमाड़ (छोटानागपुर) | 1798; 1914-15 | भोलानाथ सहाय/सिंह (1798) जात्रा भगत, बलराम भगत (1914-15) |
| हो और मुंडा | सिंहभूम और रांची (छोटानागपुर क्षेत्र) | 1820-37; 1890 | परहाट के राजा (हो) बिरसा मुंडा (1890) |
| अहोम | असम | 1828-30 | गोमधर कोंवर |
| खासी | जयंतिया और गारो पहाड़ियों के बीच का पहाड़ी क्षेत्र | 1830 | नुनक्लो शासक - तीरथ सिंह |
| कोल | छोटानागपुर (रांची, सिंहभूम, हज़ारीबाग, पलामू) | 1831 | बुद्धो भगत |
| संथाल | राजमहल पहाड़ियाँ | 1833; 1855-56 | सिब्हु मुर्मू और कान्हू मुर्मू |
| खोंड | उड़ीसा, आंध्र प्रदेश | 1837-56 | चक्र बिश्नोई |
| कोया | पूर्वी गोदावरी ट्रैक (आंध्र) रंपा (आंध्र) | 1879-80; 1886 1916; 22-24 | तोमा सोरा, राजा अनंतय्यार अल्लूरी सीताराम राजू (रम्पा विद्रोह) |
| भील | पश्चिमी घाट, खानदेश (महाराष्ट्र), दक्षिण राजस्थान | 1817-19; 25; 31; 46 & 1913 | गोविंद गुरु (1913 मनगढ़ नरसंहार) |
| गोंड | आदिलाबाद (तेलंगाना) | 1940 | कोमरम भीम |

दृष्टिभेनस प्रश्न:

प्रश्न: औपनिवेशिक भारत में जनजातीय वदिरोह ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के खिलाफ गहरी शिकायतों को दर्शाते हैं। मुख्य भूमि और सीमावर्ती क्षेत्रों के उदाहरणों के संदर्भ में इस कथन पर चर्चा कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. भारत के इतहास के संदर्भ में 'उलगुलान' या 'महा उथल-पुथल' का नेतृत्व किसके द्वारा किया गया था? (2020)

(a) बकशी जगबंधु

- (b) अल्लूरी सीतारामराजू
- (c) सद्दिधू और कानहू मुरमु
- (d) बरिसा मुंडा

उत्तर: (d)

प्रश्न 2. संथाल वदिरोह के शांत हो जाने के बाद, औपनिवेशिक शासन द्वारा कौन-सा/से उपाय कया/कयि गए? (2018)

1. 'संथाल परगना' नामक राज्यक्षेत्रों का सृजन कया गया ।
2. कसी संथाल द्वारा गैर-संथाल को भूमि अंतरण करना गैरकानूनी हो गया ।

नीचे दयि गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

प्रश्न. नमिनलखिति में से कसिने 19वीं शताब्दी में भारत में जनजातीय वदिरोह के लयि एक सामान्य कारक प्रदान कया? (2011)

- (a) भूमि राजस्व और आदवासी उत्पादों पर कर लगाने की नई प्रणाली की शुरुआत
- (b) आदवासी क्षेत्रों में वदिशी धार्मिक मशिनरयिों का प्रभाव
- (c) आदवासी क्षेत्रों में बच्चिलयिों के रूप में बड़ी संख्या में साहूकारों, व्यापारयिों और राजस्व कसिनों का उदय ।
- (d) आदवासी समुदायों की पुरानी कृषि व्यवस्था का पूरण वघिटन

उत्तर: (d)